Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 1, January - 2026

DOIs:10.2018/SS/202601004 --:-- Research Paper / Article / Review

गदर आंदोलन के प्रणेता : लाला हरदयाल

रमेश कुमार सिंह
शोध छात्र, इतिहास विभाग ,दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ,गोरखपुर
ईमेल : pri.rintoo@gmail.com

शोध सार : भारत लाला हरदयाल के प्रति कृतज्ञता का ऋणी है। उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए जो कुछ किया, उसे आज भी उचित रूप से स्वीकार किया जाना बाकी है। विरोधाभासों से ग्रस्त हरदयाल एक मनमौजी आदर्शवादी, बुद्धिजीवी थे, जो भारत और अमेरिका में जनता के साथ लगभग रहस्यमय सहानुभूति महसूस करते थे। उन्होंने न केवल भारत में बल्कि बाहर भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लौ जलाए रखी। 1905 में वे शैक्षणिक गतिविधियों के लिए इंग्लैंड गए। लेकिन कुछ वर्षों के बाद उन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए इंग्लैंड छोड़ दिया। वे 25 वर्षों तक अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों में रहे और अंततः इंग्लैंड लौट आए, जहाँ उन्होंने तीन पुस्तकें लिखीं। हरदयाल का कद इतना बड़ा था कि उन्हें एक ही ढाँचे में रखना बहुत मुश्किल है। वे दूरदर्शी थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन बोधि सत्व सिद्धांत, धर्मों की तर्कसंगत व्याख्या और आत्म-संस्कृति के विकास के लिए अपने पांडित्यपूर्ण ज्ञान को साझा करने में समर्पित कर दिया। प्रस्तावित शोध-पत्र इंग्लैंड में बौद्धिक गतिविधियों में उनके लौटने के उद्देश्य की जाँच करना चाहती है। साथ ही शोध-पत्र में उनके कार्यों की समकालीन प्रासंगिकता का भी विश्लेषण किया गया है, जिसमें मानवतावाद, बुद्धिवाद और वैज्ञानिक सोच का एक सामान्य सूत्र था। उनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही जीवंत है जितनी सालो पहले थी। वे सच्चे देशभक्त थे । जिन्होंने अपने देश के लिए स्वतंत्रता का सपना देखा था। वे आम लोगों में विज्ञान और युवाओं में वैज्ञानिक सोच विकसित करने के अग्रदूत थे।

बीज शब्द: लाल हरदयाल, गदर, पोर्टलैन्ड, मानववाद, कैलिफोर्निया ।

1. शोध विस्तार :

गदर आंदोलन का इतिहास लेखन उन कष्टों और बलिदानों की गाथा को चित्रित करता है, जिनसे लोगों को राज्य के दमन के तहत गुजरना पड़ा । वास्तव में, गदर आंदोलन के प्रवासी भारतीयों ने कनाडा में रहकर ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की अपनी महत्वाकांक्षी योजना शुरू की। हालांकि यह एक 'अप्रत्याशित मिशन' था । [1], फिर भी इसने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में एक महत्वपूर्ण क्षण प्रदान किया। इसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक नाटकीय प्रकरण तथा देशभक्ति, बहादुरी और वीर बलिदान की गाथा के रूप में भी देखा जाता है।[2]

इसके अलावा, यह भारतीयों का पहला गैर-धार्मिक और गैर-सांप्रदायिक संगठित राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन था। दूसरे शब्दों में, यह मूल रूप से धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक था, शब्द के वास्तविक अर्थो में देशभक्तिपूर्ण; वे राष्ट्रवादी थे जो ब्रिटिश शासन को क्रांतिकारी रूप से उखाड़ फेंकने के लिए प्रतिबद्ध थे।[3] इसने सभी समुदायों को अपनी ओर आकर्षित किया और बाद में देश के अन्य क्रांतिकारी समूहों को भी अपने धार्मिक पूर्वाग्रहों को त्यागने के लिए प्रेरित किया।[4] इसके अलावा, गदर ने एक समूह के रूप में पूर्ण स्वतंत्रता का नारा बुलंद किया और पहली बार भारत में एक गणतांत्रिक सरकार के लिए काम किया। उन्होंने अपने मिशन की पूर्ति के लिए बलिदान दिया ।[5]

2. लाल हरदयालः प्रारंभिक जीवन एवं बौद्धिकता

हरदयाल का जन्म कायस्थ परिवार मे 14 अक्टूबर 1884 को चीरखाना (दिल्ली) मे हुआ था। उनके पिता गौरी दयाल माथुर, फारसी और उर्दू के विद्वान थे। और दिल्ली के जिला न्यायालय में कॉपी रीडर के पद पर कार्यरत थे। उनके पिता बहुत अमीर नहीं थे।

उनकी आय मामूली थी और नौकरशाही में उनकी स्थिति अपेक्षाकृत कम थी।[6] घर एक छोटी सी इमारत थी। इसके अलावा, गौरी दयाल के पास सात बच्चों का एक बड़ा परिवार था, जिसमें चार बेटे और तीन बेटियाँ थी, जिनका भरण-पोषण उन्होंने बहुत मुश्किल से किया। हरदयाल छठा बच्चा था।[7] अपने शुरुआती जीवन में, हरदयाल अपने पिता से प्रभावित थे। वे बड़े होकर फारसी और उर्दू दोनों के अच्छे विद्वान बने। उन्हें अपनी पारंपरिक हिंदू संस्कृति-संस्कार अपनी माँ से मिला। घर में सभी लोग भगवान राम और कृष्ण की पूजा करते थे। उन्हे रामायण बहुत पसंद थी।[8]

चार वर्ष की आयु में उन्हें कैब्रिज मिशन स्कूल, दिल्ली भेजा गया और 12 वर्ष की आयु में उन्होंने मिडिल स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 14 वर्ष की आयु में मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की।[9] उन्होंने सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली से कला स्नातक की डिग्री और गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से 1903 में प्रथम स्थान के साथ अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की।[10] उन्होंने लाहौर के उसी कॉलेज से इतिहास में एम.ए. किया। हरदयाल की शादी 17 साल की उम्र में लाला गोपाल चंद की बेटी सुन्दर रानी से हुई थी।[11] हरदयाल को सार्वजनिक मामलों में गहरी दिलचस्पी थी। उन्होंने बुजुर्गो के लिए कायस्थ सभा की स्थापना की। वे यंग मेन्स क्रिश्चियन एसोसिएशन के सदस्य थे। लाहौर में वे रेशनलिस्ट सोसाइटी में शामिल हो गए।[12] अपने छात्र जीवन में वे 'स्वतंत्र विचारक' थे। इसके अलावा, ब्रह्म समाज के प्रति उनके मन में एक नरम रुख था, हालांकि जो लंबे समय तक नहीं चल सका।1903-05 के दौरान वे लाहौर में आर्य समाज में शामिल हो गए।[13] लाला हंस राज, लाला लाजपत राय और भाई परमानंद का उनके आचरण पर स्थायी प्रभाव था। उनके दो आदर्श थेः आर.सी. दत्त और आर.पी. परांजपे। वे वी.डी. सावरकर से भी समान रूप से प्रभावित थे।[14]

हर दयाल को 1905 में तीन साल के लिए राजकीय छात्रवृत्ति के लिए चुना गया था, जो भारत सरकार द्वारा उन होनहार युवा भारतीय विद्वानों को दी जाती थी, जिनसे इंग्लैंड में शिक्षा पूरी करने के बाद सरकारी सेवा में शामिल होने की उम्मीद की जाती थी।[15] उन्होंने सितंबर 1905 में सेंट जॉन कॉलेज, ऑक्सफोर्ड में यूरोपीय इतिहास और ब्रिटिश भारत का विशेष अध्ययन करने के लिए दाखिला लिया।[16] उन्होंने श्यामजी कृष्णवर्मा (1857-1930) द्वारा स्थापित इंडिया हाउस का दौरा किया, उनकी मुलाकात वीडी सावरकर (1883-1966), वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय (1880-1942) से हुई। इस समय, हरदयाल को अभिनव भारत मे शामिल किया गया और शपथ दिलाई गई।[17]

1907 की शरद ऋतु में, उन्होंने अपनी छात्रवृत्ति से इस्तीफा दे दिया। हालाँकि, वे अपने इस्तीफे के कारणों को बताने में संकोच कर रहे थे। लगातार आधिकारिक उकसावे के साथ, उन्होंने सेंट जॉन्स कॉलेज के अध्यक्ष से अपनी पढ़ाई पूरी न कर पाने के लिए "दुख" व्यक्त किया। उन्हें दो अन्य छात्रवृत्तियाँ भी मिल रही थीं, एक 80 पाउंड की और दूसरी 50 पाउंड की। उन्होंने इन दो छात्रवृत्तियों को भी छोड़ दिया और कॉलेज छोड़ दिया।[18]

जनवरी 1908 में उन्होंने तृतीय श्रेणी का टिकट बुक किया। वे अपनी पत्नी के साथ कोलंबो से पंजाब पहुंचे। पंजाब जाते समय उनकी मुलाकात पुणे में बी.जी. तिलक और जी. के. गोखले से हुई। अपनी पत्नी को पटियाला में छोड़कर वे लाहौर चले गए, जहाँ वे सुतार मंडी में दूसरी मंजिल पर एक किराए के कमरे में रहे। वह कुछ समय तक लाहौर में लाला लाजपत राय के साथ भी रहे। अगस्त 1908 में वे यूरोप लौट आए और फिर कभी भारत नहीं लौटे। लंदन जाने के बाद वे पेरिस चले गए। वहाँ वे मिस्र और रूसी क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। वे कार्ल मार्क्स के पोते जीन लोनक्वेट के भी निकट संपर्क में आए। सितंबर 1909 में पेरिस में उन्होंने 'बंदे मातरम' नामक मासिक पत्रिका संपादन किया। 1910 में, वे स्वास्थ्य कारणों से पेरिस छोड़कर अल्जीयर्स चले गए।[19]

3. अमेरिकी प्रस्थान एवं ग़दर की प्रमुखता

1911 की शुरुआत में, हरदयाल ब्रिटिश साम्राज्य से दूर संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए। बोस्टन से, वे कैलिफोर्निया और बर्कले गए। उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर डॉ. ए.डब्ल्यू. राइडर और कैलिफोर्निया के पालो ऑल्टो में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के डॉ. स्टुअर्ट लेलैंड के साथ मित्रता स्थापित की। वे दोनों पूर्वी दर्शन में पारंगत थे।[20]

उन्होंने मैडम भीखाजी रुस्तम केआर कामा (1861-1936) के साथ पत्र-व्यवहार जारी रखा। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में, वे विभिन्न समाजवादी और अराजकतावादी समूहों के संपर्क में आए। उन्हें मार्क्सवाद से परिचित कराया गया, जिसने उन्हें कार्ल मार्क्स की

जीवनी लिखने के लिए प्रेरित किया।[21] उन्होंने सैन फ्रांसिस्को में अराजकतावाद का प्रचार किया। वे सैन फ्रांसिस्को रेडिकल क्लब के सचिव बने और कैलिफोर्निया के बैकुनिन इंस्टीट्यूट की स्थापना की।[22]

1912 की गर्मियों में वे राष्ट्रवादी विचारधारा में लौट आए, क्योंकि 23 दिसंबर 1912 को दिल्ली में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की हत्या की कोशिश से वे बहुत उत्साहित थे। 1912-13 में हरदयाल इंडस्ट्रियल वर्कर्स ऑफ द वर्ल्ड की सैन फ्रांसिस्को शाखा के सचिव बने।[23]

1909 में उनका पहला योगदान एक महत्वपूर्ण लेख था, जिसे "हिंदू जाति की सामाजिक विजय" नाम दिया गया था। उन्होंने यह विचार सामने रखा कि ब्राह्मणों ने लोगों की संस्थाओं और विचार प्रक्रियाओं को नियंत्रित करके गैर-हिंदुओं पर प्रभुत्व हासिल कर लिया है। उन्होंने इसे भारत में अंग्रेजों के उदय से जोड़ा और उन्हें ब्राह्मण कहा।[24] अन्य विषय जिन्होंने उन्हें आकर्षित किया, वे थे "पश्चिम में महिलाएं" जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि उदार व्यवसायों में शामिल होकर, महिलाएं पश्चिम में 'पुरुषों के साथ समानता स्थापित कर सकती है'।[25] उन्होंने सेंट फ्रांसिस, सेट रोज, रूसो, वोल्टेयर, बाकुनिन और माज़िनी जैसे यूरोपीय विचारको और दार्शनिकों की ओर रुख किया। उन्होंने एक संक्षिप्त जीवनी लिखी कार्य मार्क्सः एक आधुनिक ऋषि।[26] मार्क्सवाद और समाजवाद में उन्होंने "राष्ट्र की संपत्ति पर ध्यान केंद्रित किया और यह विचार प्रस्तुत किया कि 'सच्ची संपत्ति नागरिकों की बुद्धि और चरित्र में निहित है।[27] "भारतीय किसान" पर उनका लेख उन्हें लोगों या वर्गो से संबंधित अन्य सभी लेखों से ऊपर रखता है। उन्होंने अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हुए कहा कि 'किसान पर अत्यधिक कर लगाया जाता है, वह कम खाता है और उसके कपड़े खराब होते हैं'; भारतीय किसान को 'अपनी पीड़ा को गाने के लिए एक आवाज' की आवश्यकता है। जाहिर है, वह कैलिफोर्निया या उत्तरी अमेरिका में खेतों और कारखानों में काम करने वाले किसानों, कारीगरों और मजदूरों के करीब जा रहे थे।[28]

1912 के अंत तक हरदयाल लंदन, दिल्ली, कलकत्ता और शिमला के सरकारी हलकों में 'एक सम्मानित व्यक्ति' बन चुके थे। इसके अलावा, प्रचार ने उन्हें प्रवासी किसानों के बीच एक बड़ा व्यक्ति बना दिया।[29] उन्होंने भाई ज्वाला सिंह से मुलाकात की और उन्हें गुरु गोबिंद सिंह छात्रवृत्ति स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।[30] हालांकि, जब हरदयाल संयुक्त राज्य अमेरिका पहुंचे, तो उन्होंने दमनकारी कानून के खिलाफ लड़ाई में पश्चिमी तट पर अप्रवासी भारतीयों का नेतृत्व करने के निमंत्रण को नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने तर्क दिया कि वे मजदूर आंदोलन और सामाजिक क्रांति में फंस गए थे। हालांकि, लॉर्ड हार्डिंग पर हमले ने उन्हें क्रांतिकारी मंच पर वापस धकेल दिया।[31]

1912 की शुरुआत में पोर्टलैंड (ओरेगन) में एक बैठक हुई जिसमें ब्राइडल वेल (ओरेगन) से भाई हरनाम सिंह, सेंट जॉन (ओरेगन) से पंडिप्त कांशी राम और राम राखा, मोनारिक मिल से सोहन सिंह भकना और भाई उधम सिंह कासेल शामिल हुए। इसके परिणामस्वरूप पोर्टलैंड (ओरेगन) में एक किराए के घर में कार्यालय के साथ हिंदुस्तान एसोसिएशन ऑफ पैसिफिक कोस्ट का गठन हुआ। सोहन सिंह भकना, जीडी कुमार और पंडित कांशी राम क्रमशः अध्यक्ष, महासचिव और कोषाध्यक्ष चुने गए।[32] इसके अलावा, 1913 की शुरुआत में पंडित कांशीराम और ओरेगन के अन्य लोगों ने हरदयाल को भारतीय स्वतंत्रता लीग की जगह एक नया संगठन बनाने के लिए आमन्त्रित किया। हरदयाल ने इसे मई 1913 तक टाल दिया।[33] माइकल ओ'डायर ने माना कि 'भारतीय प्रवासियो, मुख्य रूप से सिखो को भ्रष्ट करने के लिए कुछ वर्षों से राजद्रोही आंदोलन काम कर रहा था।' हरदयाल ने 'जमीन तैयार की और बीज बोने के लिए काम शुरू कर दिया।[34] कई कारक काम कर रहे थे क्योंकि ओरेगन, कैलिफोर्निया और वाशिंगटन में काम करने वाले भारतीय अप्रवासी अब राजनीतिक चेतना विकसित करना शुरू कर रहे थे; 1912 में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव ने भारतीयों को अवसाद और बढ़ती बेरोजगारी के वर्ष में एक संगठन बनाने के लिए प्रेरित किया; सेंट जॉन (ओरेगन) में रात के हमलों ने भारतीय श्रमिकों को असुरक्षित बना दिया। टैकोमा (वाशिंगटन) में, भारतीयों ने उत्पीड़न से भागने के बजाय वापस लड़ने का फैसला किया। इसने ओरेगन और कैलिफोर्निया में भारतीयों के बीच आत्मविश्वास पैदा किया।[35] 1912 की सर्दियों में सोहन सिंह भकना और भाई उधम सिंह कासेल भाई केसर सिंह के पास एस्टोरिय (ओरेगन) आए। उन्होंने उनसे वहां एक एसोसिएशन बनाने के लिए कहा जो हिंदुस्तानी एसोसिएशन की एक और शाखा बन गई। भाई केसर सिंह, मुंशी करीम बख्श और श्री मुंशी राम को अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष चुना गया। इस बीच, एक प्रमुख नेता श्री जीडी कुमार बीमार पड़ गए। इसलिए, लाला ठाकुर दास ने सोहन सिंह भकना और पंडित कांशी राम को सलाह दी कि वे कैलिफोर्निया से लाला हरदयाल को बुलाएँ और एसोसिएशन का काम उन्हें सौप दे।

25 दिसंबर, 1912 अपने आगमन से दो दिन पहले, उन्होंने एक पत्र भेजा जिसमें उनके आगमन का समय मार्च 1913 बताया गया था। हरदयाल 25 मार्च, 1913 को लाहौर के भाई परमानंद के साथ सेंट जॉन (ओरेगन) आए।[36] 31 मार्च 1913 को एसोसिएशन की पहली बैठक ब्राइडल वेल (ओरेगन) में हुई। लाला हरदयाल और कांसीराम सेंट जॉन से इसमें शामिल होने आए थे। उन्होंने एसोसिएशन की शाखा स्थापित करने का फैसला किया। अगली बैठक 7 अप्रैल 1913 को लिंटन (ओरेगन) में हुई। 14 अप्रैल 1913 को बिना (ओरेगन) में एक और बैठक हुई। भाई उधम सिंह कासेल को सचिव चुना गया। यह तय हुआ कि अगली बैठक एस्टोरिया में होगी।[37] हरदयाल इन सभाओं से बहुत प्रभावित हुए। तय कार्यक्रम के अनुसार अगली बैठक रविवार, 21 अप्रैल 1913 को एस्टोरिया की एक मिल में हुई। वहाँ प्रतिनिधि एकत्र हुए। हिंदी प्रशांत संघ नामक राजनीतिक संगठन के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया; इसका उद्देश्य अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष करना था, इसका मुख्यालय सैन फ्रांसिस्को में होना था जो एक समुद्री बंदरगाह और क्रांतिकारियों का केंद्र था; शीर्षक से एक पेपर प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया गदर उर्दू, पंजाबी, हिंदी और अन्य भाषाओं में; वार्षिक चुनाव होंगे; सदस्यता शुल्क न्यूनतम एक डॉलर प्रति माह होगा; कोई धार्मिक चर्चा की अनुमति नहीं थी, धर्म को व्यक्तिगत आस्था माना जाता था। सोहन सिंह भकना को इसका अध्यक्ष, भाई केसर सिंह ठठगढ़ को इसका उपाध्यक्ष, हरदयाल को इसका महासचिव और पंडित कांशी राम को कोषाध्यक्ष घोषित किया गया।[38]

मई 1913 के अंत में पोर्टलैंड (ओरेगन) में एक बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता हरदयाल ने की। एक क्रांतिकारी पत्र के प्रकाशन को प्रायोजित करने पर सहमति बनी और इसके लिए धन जुटाने की बात कही गई। इस प्रकार, प्रशांत तट का हिंदू संघ अस्तित्व में आया।[39] हरीश के. पुरी ने इसे संशोधित करते हुए प्रशांत तट का हिंदी एसोसिएशन लिखा है, क्योकि अन्य सभी खातों में इसे हिंदी कहा गया है।[40] हालोंकि, आंदोलन की शुरूआत की सार्वजनिक घोषणा 4 जून 1913 को फिनिश सोशलिस्ट हॉल, एस्टोरिया में हर दयाल द्वारा एक अच्छी तरह से उपस्थिता सार्वजनिक व्याख्यान में की गई थी। स्थानीय समाचार पत्र ने ब्रिटिश शासन के बारे में उनके गंभीर आरोप पर ध्यान दिया।[41]

4. गदर अखबार और इसका आंदोलन पर प्रभाव

गदर अखबार को बेचने के लिए 9000 रुपए एकत्र किए गए थे। यह पहली बार 1 नवंबर 1913 को छपा था। ऐसा दावा किया गया था कि इस अखबार ने 'लोगो के दिमाग पर जान की तरह काम किया। अखबार की बढ़ती मांग के कारण एक बड़ा प्रेस खरीदा गया और उसे लगाया गया। करीब 20 देशभक्तों ने दिन-राते काम किया। छोटी पुस्तिकाएं और पैम्फलेट भी छापे गए।[42] 1914 के अंत तक, गदर अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, गुजराती, पश्तू, गोरखाली और गुरुमुख में प्रकाशित किया जा रहा था, जो प्रचलन में सबसे अधिक था। यह कनाडा, जापान, फिलीपीन हांगकांग, चीन, मलाया राज्य, सिंगापुर, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिदाद, होड्रास, दक्षिण और पूर्व अफ्रीका जैसे दुनिया भर में अधिकांश भारतीय बस्तियों तक पहुँच गया। भारत को भी हजारों प्रतियाँ भेजी गई।[43] इसमें बेनेडिक्ट एंडरसन के इस कथन की प्रतिध्वनि थी कि 'मुद्रित ज्ञान पुनरुत्पादन और प्रसार द्वारा जीवित रहता है।[44] इससे क्रांति का संदेश दूर-दूर तक फैल गया जिससे ब्रिटिश खुफिया एजेंसियां हैरान रह गई। हर दयाल के नाम से ही सब कुछ सामने आय और सारा श्रेय उन्हें ही मिला।

स्वागत समारोह गदर अखबार और इससे पैदा हुई राजनीतिक हलचल ने अमेरिकी और ब्रिटिश खुफिया एजेंसियों के बीच चिंता और सतर्कता पैदा कर दी। कुछ ही महीनों में, अंग्रेजों ने हरदयाल को परिदृश्य से हटाने का फैसला कर लिया। यह माना जा रहा था कि उनके चले जाने से गदर पार्टी खत्म हो जाएगी।[45] ब्रिटिश काउंसिल ने अमेरिकी अधिकारियों से शिकायत की थी। 25 मार्च 1914 को हरदयाल को गिरफ्तारी का वारंट जारी किया गया। सैन फ्रांसिस्को में अमेरिकी अधिकारियों ने उन्हें अराजकतावादी और अवांछित विदेशी होने के आरोप में गिरफ्तार किया। उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया क्योकि एक अमेरिकी महिला ने ज़मीन के एक टुकड़े के रूप में 1000 डॉलर की जमानत दी थी। हालाँकि, गदर पार्टी ने यह राशि वापस कर दी।[46] हरदयाल को डर था कि उसका नाम लॉर्ड हार्डिंग की हत्या की साजिश से जोड़ा जाएगा। वह जमानत पर छूट गये और स्विट्जरलैंड चले गये।[47] जनवरी 1915 में वे स्विटजरलैंड से बर्लिन चले गये और वहां फरवरी 1916 तक भारत और जर्मनी के साझा हितों के लिए जर्मनों और तुर्की के साथ काम करते रहे।[48]

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मन भारत के क्रांतिकारियों को अंग्रेजों के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए उत्सुक थे। हरदयाल 27 जनवरी 1915 को बर्लिन पहुंचे। उन्होंने बर्लिन इंडिया कमेटी में काम किया। । [49] मार्च 1916 के अंत में उन्हें समिति द्वारा स्वेज मिशन के आयोजन में सहायता करने के लिए तुर्की जाने के लिए नियुक्त किया गया।[50] हरदयाल जर्मन सरकार के अधिकारियों के साथ तालमेल नहीं बिठा पाए और उन्होंने वहाँ से चले जाने का फैसला किया। उन पर शक किया जाने लगा। उन्होंने 19 फरवरी 1919 को बर्लिन कमेटी से इस्तीफा दे दिया। वहाँ से वे स्वीडन चले गए।[51]

हर दयाल ने युद्धविराम की घोषणा से एक महीने पहले अक्टूबर 1918 में स्वीडन में प्रवेश किया। वे स्टॉकहोम पहुंचे। उन्होंने "जर्मनी और तुर्की में फरवरी 1915 से अक्टूबर 1918 में अपने व्यक्तिगत अनुभवों को लिखा, जिसमें उन्होंने जर्मनों को 'अर्ध-बर्बर' बताया और अंग्रेजी या फ्रांसीसी साम्राज्यवाद का समर्थक बताया । उन्होंने एक कठोर निर्णय दिया: "पिछले 48 वर्षों (1870 में एकीकरण के बाद से) के दौरान जर्मनी का इतिहास विफलता में समाप्त होने वाली मूर्खता का रिकॉर्ड रहा है। यह एक जर्मन अपराध था जो जर्मन तबाही में समाप्त हुआ।[52] 1922 में, उन्होंने हमारी शैक्षिक समस्या प्रकाशित की। ये उन लेखों का संग्रह था जो उन्होंने समय-समय पर प्रकाशित किए। उन्होंने ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली की निंदा की और घोषणा की कि 'संस्कृत पूरे भारत के लिए एकमात्र राष्ट्रीय भाषा है'।[53] स्वीडन में, उन्होंने संगीत, चित्रकला और मूर्तिकला का अध्ययन किया। उन्होंने संगीत, राजनीति और अर्थशास्त्र पर व्याख्यान दिया; उन्होंने उप्साला विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शन पढ़ाया। उन्हें कई भाषाओं पर महारत हासिल थी। नवंबर 1926 में उनकी मुलाकात स्वीडिश सामाजिक कार्यकर्ता और परोपकारी एग्डा एरिक्सन से हुई। 1932 में उन्होंने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया, जबकि उनकी पहली पत्नी भारत में रह रही थीं।[54]

मार्च 1927 में हरदयाल ने ब्रिटिश सरकार से लंदन जाने की अनुमति मांगी। 10 अक्टूबर 1927 को वे लंदन पहुँचे। 1928 में उन्होंने लंदन के स्कूल ऑफ़ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़ में बौद्ध संस्कृत साहित्य में बोधिसत्व सिद्धांत पर डॉक्टरेट की डिग्री के लिए काम करने का फैसला किया।[55] 1932 में उन्हें डॉक्टर ऑफ़ फिलॉसफी की डिग्री से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक हिंट्स ऑन सेल्फ कल्चर पर काम किया जो 1934 में प्रकाशित हुई। 1937 में उनकी दूसरी रचना "ट्वेल्व रिलिजन्स एंड मॉडर्न लाइफ़" प्रकाशित हुई। 25 अक्टूबर 1938 को हरदयाल को एक पत्र भेजा गया जिसमें कहा गया कि उन्हें डॉक्टरेट की डिग्री दी गई है।

25 अक्टूबर 1938 को एक पत्र हर दयाल को भेज गया जिसमे भारत लौटने की अनुमति की बात थी।[56] वे कुछ समय के लिए अमेरिका गए। दिसंबर 1938 में, उन्हें फिलाडेल्फिया (अमेरिका) में ब्रिटिश सरकार से आधिकारिक पत्र मिला। 4 मार्च, 1939 को, 55 वर्ष और 4 महीने की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। अपने अंतिम व्याख्यान में उनके अंतिम शब्द थे: "मैं सभी के साथ शांति से हूँ" ।[57]

लाला हरदयाल अपने लेखन और गतिविधियों से एक प्रतिभाशाली और उत्साही क्रांतिकारी राष्ट्रवादी के रूप में उभरे हैं। उन्होंने अमेरिका (कैलिफोर्निया) और कनाडा (ब्रिटिश कोलंबिया) में सिख किसानों और अन्य भारतीय प्रवासियों की मदद से भारत की पहली सशस्त्र और धर्मनिरपेक्ष क्रांतिकारी पार्टी 'गदर पार्टी' का गठन किया। यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सबसे शक्तिशाली आंदोलनों में से एक था। लाला हरदयाल हालांकि लंबे समय तक भारत से बाहर रहे, फिर भी वे भारत में हो रही घटनाओं से लगातार जुड़े रहे। उनका आजीवन जुनून और सपना भारत की आजादी था। क्रांतिकारी संघर्ष में कूदकर उन्होंने एक तरह से अपनी पत्नी, अपने बच्चे, परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों को बलिदान कर दिया और विदेश में भारत की आजादी के लिए काम किया और निर्वासित जीवन व्यतीत किया।

संदर्भ सूची: References :

1. Mark Juergensmeryer, "Ghadar in Global Context", *The Ghadar Centenary Lecture*, (New Delhi: Indian Council of Historical Research; Ministry of Culture, Government of India, November 27, 2013), p. 3.
2. Harish K. Puri, The Ghadar Movement: A New Consciousness", *Social and Political Movements* (Eds. Harish K. Puri and Paramjit S. Judge), (New Delhi: Rawat Publications, 2000), pp. 145-70.

3. Jagjit Singh, *Ghadar Party Lehar: A Tribute* (Anaheim, CA: SGGS Foundation, 2015), first published 1955, p. 13; Manoranjan Mohanty (Introduction), *Selected Writings of Randhir Singh,* (New Delhi: Aakar Books, 2017), p. 395.
4. Khushwant Singh and Satindra Singh, *Ghadar 1915: India's First Armed Revolution*, (New Delhi: R & K. Publishing House, 1966), p. 57.
5. Gurdev Singh Deol, *The Role of the Ghadar Party in the National Movement* (Jalandhar: Sterling Publishers, 1969), p. 192.
6. S. P. Sen (Ed.), *Dictionary of National Biography,* Vol. II (Calcutta: Institute of Historical Studies, 1973), p. 140. For Harjot Obroi, Har Dayal belonged to an upper caste Hindu family:
7. Dharmavira, *Lala Har Dayal and Revolutionary Movements of His Times*, (New Delhi: Indian Book Company, 1970), p. 10.
8. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 11.
9. Nagendra Kr. Singh (Ed), *Encyclopedia of the Indian Biography*, Vol. III, (New Delhi: APH Publications, 2000), pp. 479-80.
10. Raj Kumar, *Lala Har Dayal (1884-1939),* Unpublished M. Phil Dissertation (Amritsar: Guru Nanak Dev University, 2010), pp. 13-14.
11. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 12.
12. Dharmavira, *Lala Har Dayal and Revolutionary Movements of His Times*, p. 12. See also, Lala Lajpat Rai, *Young India* (Delhi: The Publishing Division, 1976), p. 165.
13. Dharm Vira, "Dr. Har Dayal", *Punjab's Eminent Hindus* (Ed. N.B. Sen), (Lahore, New Book Society, 1943), p. 58.
14. Harish K. Puri, *Ghadar Movement: Ideology, Organisation and Strategy,* (Amritsar: Guru Nanak Dev University, 1983), p. 71; Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 16.
15. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 18.
16. Navrattan Kapur, Dr. *Har Dayal: A Practical Intellectual and Diplomat* (Punjabi), (Patiala: Punjabi University, 1988), p. 8.
17. P. C. Joshi, "Lala Har Dayal: A Biographical Note and a Note on His *Karl Marx*", *Marx Comes to India* (Ed. K. Damodaran), (New Delhi: Manohar, 1973), pp. 24-25.
18. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, pp. 20-21, 36-38; Dharm Vira, "Dr. Har Dayal", *Punjab's Eminent Hindus*, p. 60.
19. S. P. Sen (Ed.), *Dictionary of National Biography,* Vol. II, p. 141.
20. *Home/Political Proceedings,* Nos. 4-6, July 1913: History Sheet of Har Dayal, pp. 2-3.
21. P. C. Joshi, "Lala Har Dayal: A Biographical Note and a Note on His *Karl Marx*", *Marx Comes to India*, p. 26.
22. Darisi Cheinchiah, "The Ghadar Party: Reminiscences", *Heritage Bulletin*, No. 3, (Jalandhar: Desh Bhagat Yadgar Library, July 23, 1996), p. 17; John W. Spellman, "The International Extension of Political Conspiracy as Illustrated by the Ghadar Party", *Journal of Indian History*, Vol. xxxvii, April 1959, p. 26.
23. P. C. Joshi, "Lala Har Dayal: A Biographical Note and a Note on His *Karl Marx*", *Marx Comes to India*, p. 27.
24. Har Dayal, "Social Conquest of the Hindu Race", *Modern Review,* September 1909, pp. 239-48.
25. Har Dayal, "Women in the West", *Modern Review*, January 1912, p. 45.
26. Har Dayal, "Karl Marx: A Modern *Rishi*", *Modern Review*, March 1912, pp. 43-50.
27. Har Dayal, "The Wealth of the Nation", *Modern Review*, July 1912, p. 45.
28. X.Y.Z., "The Indian Peasant", *Modern Review*, May 1913, p. 508.

29. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 127.
30. Gurcharan Singh Sansera, *Ghadar Party Da Itihas, 1912-17*, Part-I, pp. 36-38.
31. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 137.
32. Gurdev Singh Deol, *The Role of the Ghadar Party in the National Movement*, p. 56.
33. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 138.
34. Michael O'Dwyer, *India As I Knew It (1885-1925)*, (New Delhi: Mittal Publications, 2004) first published 1925, p. 186.
35. Gurdev Singh Deol, *The Role of the Ghadar Party in the National Movement*, p. 55.
36. Gurcharan Singh Sansera, *Ghadar Party Da Itihas, 1912-17*, Part-I, pp. 91-92.
37. Gurdev Singh Deol, *The Role of the Ghadar Party in the National Movement*, pp. 55-56.
38. Gurcharan Singh Sansera, *Ghadar Party Da Itihas, 1912-17*, part-I, pp. 94-95.
39. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 138.
40. Harish. K. Puri, *Ghadar Movement: Ideology, Organisation and Strategy*, p. 68.
41. Harish K. Puri, "Making of Ghadar Movement", *The Ghadar Movement: Background, Ideology, Action and Legacies* (Eds. J.S. Grewal, Harish K. Puri and Indu Banga), p. 144.
42. Rajwinder Singh Rahi (Ed.), *Meri Ram Kahani: Baba Sohan Singh Bhakna,* (Samana: Sangam Publications, 2012), p. 86.
43. Sohan Singh Josh, *Hindustan Ghadar Party: A Short History,* (New Delhi: PPH, 1977, p. 161; A.C. Bose, *Indian Revolutionaries Abroad 1905-1922*, pp. 59-60.
44. Benedict Anderson, *Imagined Communities: Reflection on the Origin and Spread of Nationalism*, (London: Verso, 2006), p. 37.
45. Harnam Singh Tundilat, "Ghadar Party: A Personal Memoir" *Unturned Leaves of Ghadar Party* (Baba Bhagat Singh Bilga), (Jalandhar: Desh Bhagat Yadgar Library), Rare Documents, p. 21.
46. Gurcharan Singh Sansera, *Ghadar Party Da Itihas, 1912-17*, Part-I, pp. 108-09; Rajwinder Singh Rahi (Ed.), *Meri Ram Kahani: Baba Sohan Singh Bhakna,* p. 87-88.
47. A.C. Bose, *Indian Revolutionaries Abroad 1905-1922*, p. 61.
48. E. Jaiwant Paul and Shubh Paul, *Har Dayal: The Great Revolutionary,* (New Delhi: Roli Books, 2003), p. 139.
49. David Machado, *The Ghadar Party and the Hindu German Conspiracy,* (Jalandhar: Desh Bhagat Yadgar Library), Manuscript, p. 8.
50. Dharmavira, *Lala Har Dayal and Revolutionary Movements of His Times*, pp. i, ii, 328-30; L. P. Mathur, *Indian Revolutionary Movements in the United States of America* (Delhi: S. Chand & Co. 1970), p. 10.
51. P. C. Joshi, "Lala Har Dayal: A Biographical Note and a Note on His *Karl Marx*", *Marx Comes to India*, p. 31.
52. Har Dayal, *Forty-Four Months in Germany and Turkey (February 1915 to October 1918: A Record of Personal Impressions*, (London: P. S. King & Son, 1920), pp. 1-2.
53. Har Dayal, *Our Educational Problem* (Madras: Tagore & Co., 1922), p. 87.
54. Emily C. Brown, *Har Dayal: A Hindu Revolutionary and Rationalist*, p. 238.
55. E. Jaiwant Paul and Shubh Paul, *Har Dayal: The Great Revolutionary,* p. 156; Dharmavira, *Lala Har Dayal and Revolutionary Movements of His Times*, p. 253.
56. Dharmavira, *Letters of Lala Har Dayal,* p. 31.
57. E. Jaiwant Paul and Shubh Paul, *Har Dayal: The Great Revolutionary,* p. 169.